आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां अंक : दसवां फरवरी-2013

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

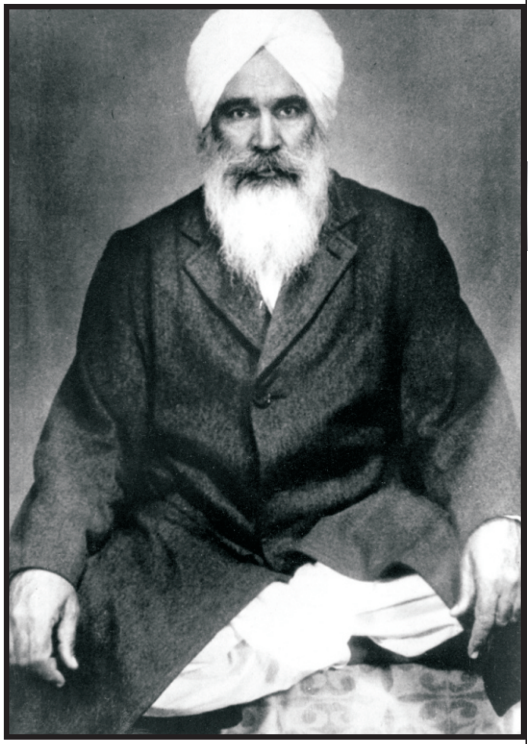

4
अधिकारी
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

29
सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन - 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

उपसम्पादक : माया रानी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया - 0 99 28 92 53 04

सहयोग : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2013 - 131 - **मूल्य - पाँच रुपये**

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अधिकारी

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

आया मास अगहन अब छठा। अघ की हानि हुई मल घटा।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे दुनिया की जो हालत देखते हैं वे उसे बड़े प्यार और हमदर्दी के साथ ब्यान करते हैं कि किस तरह दुनिया दुःखों और मुसीबतों के बीच फँसी हुई है, जीव कराह रहे हैं। दुनिया काम और क्रोध के वेग में बॉवरों की तरह दुःखी होकर पुकार रही है लेकिन इनसे बचने का उपाय नहीं सोच रही। इनसे बचने का उपाय बाहर नहीं क्योंकि ये बीमारियां जिस्म के अंदर हैं।

काम का वेग अंदर से उठकर बेदिल कर देता है, अग्नि भड़कती है इंसान को होश नहीं रहता यह भी एक तत्काल का पागलपन है। इसी तरह क्रोध का वेग उठता है यह पागल कर देता है क्रोध के वश होकर एक मुल्क दूसरे मुल्क को तबाह करने पर तुला हुआ है। एक समाज दूसरे समाज को खत्म करने पर तुली हुई है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

मूसनहार पंच पटवारे सूने नगर परे ठगहारे।
उनसे राखे बाप न माई, उनसे राखे मीत न भाई।
दरब स्याणप न ओह रहते, साध संग ओह दुष्ट बस होते।

जिस घर का मालिक सोया हुआ है उसे ये पाँच डाकु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार अच्छी तरह लूट लेते हैं अगर घर का मालिक जाग जाता है और अपने-आप पर आ जाता है तो वह इन ठगों को बर्दाश्त नहीं करता; ये ठग बड़ी जल्दी भाग जाते हैं।

सज्जनों! हमें इन पाँच ठगों से माता-पिता, भाई-बहन, यार-दोस्त, कुल-कुटुम्ब कोई नहीं बचा सकता। ये ठग न पैसे से बस में

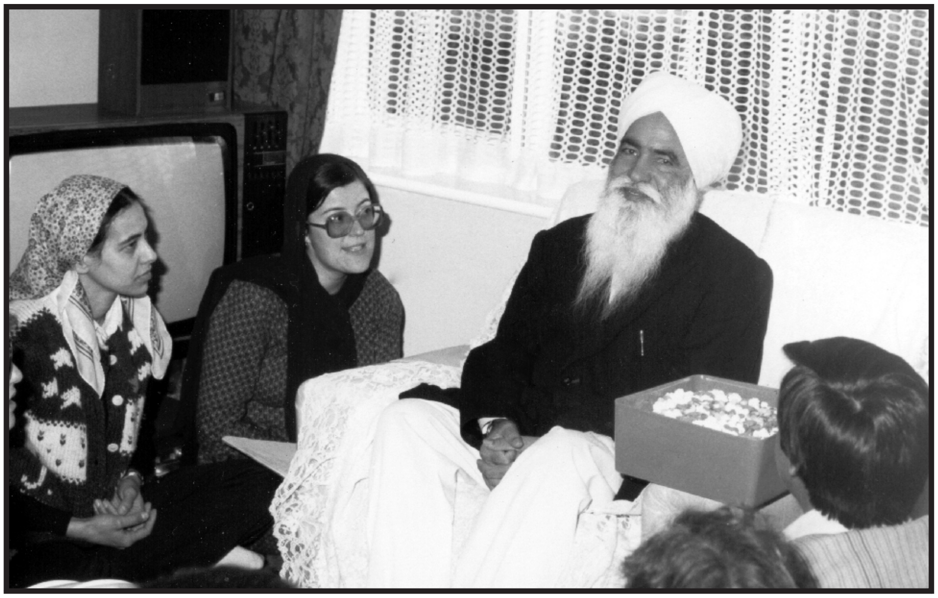

आते हैं। न पढ़-पढ़ाई से बस में आते हैं और न ज्यादा अक्ल से ही बस में आते हैं अगर आप इन दुष्ट ठगों को बस में करना चाहते हैं तो किसी कमाई वाले महात्मा की सोहबत-संगत में जाएं। महात्मा आपको इन्हें बस में करने की दवाई देगा।

सभी सन्त-महात्मा इस संसार में आकर प्रेम-प्यार से होका देते हैं। वे जिस तरह दुनिया को देखते हैं वैसा ही बयान करते हैं। स्वामी जी महाराज ने एक-एक महीने को मनुष्य जन्म के साथ तसवीह देकर बताया है कि मनुष्य जामा बहुत कीमती है। जिस तरह हम नया इंसानी जामा धारण करते हैं उसी तरह हर महीना चढ़ जाता है। इस शब्द में स्वामी जी महाराज प्यार से समझाएंगे कि जिन्हें नाम मिल जाता है, गुरु मिल जाता है उनकी मौत का रास्ता और है; जिन्हें नाम नहीं मिलता सतगुरु नहीं मिलता उनका रास्ता कोई और है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भक्तां ते संसारियां, जोड़ कदे न आया।

भक्तों और संसारियों का मिलाप नहीं हो सकता क्योंकि उनके बाहर भी रास्ते अलग हैं और अंदर भी रास्ते अलग हैं। जिन्हें नाम नहीं मिला वे बाहर के रीति-रिवाजों और कर्मकांडो में विश्वास रखते हैं। जिन्हें नाम मिल जाता है वे कर्मकांडो को धूल उड़ाने के बराबर समझते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सन्तमता सबसे ऊँचा ये निहचे कर मान।
और मते सब काल के यूं ही धूल उड़ाए।

आप प्यार से बताते हैं कि जिन्हें नाम मिल जाता है, गुरु मिल जाता है उन्हें रक्षा करने वाला मार्गदर्शन करने वाला मिल जाता है। थोड़ी बहुत कमाई वाले को भी गुरु पहले चेतावनी देता है कि तुझे फलाने समय पर चलना है तैयार रहना। जो मौत से पहले तैयार है उसे क्या डर? आला दर्जे के भक्तों की कुलें तर जाती हैं गुरमुख की अनेकों ही कुलें तर जाती हैं। जिसको नाम नहीं मिला मौत के समय उसकी बुरी हालत होती है उसे होश नहीं रहता। नाम और सतगुरु वाले संसार में चार दिन सुख से बिताते हैं और आगे अपने घर भी पहुँच जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी का अमृतसर का रहने वाला एक सतसंगी लक्खासिंह अच्छी कमाई वाला था। उसने नांदेड़ गुरुद्वारे जाना था, उसके साथ एक बूढ़ा भी था। दिन छिपने वाला था वे रास्ता भूल गए। वह बूढ़ा रोने लगा कि जंगल है कुछ दिखाई नहीं देता कोई शेर या चीता खा जाएगा। लक्खासिंह को महाराज सावन सिंह जी से नाम मिला हुआ था उसकी हालत कुछ और थी वह भजन-अभ्यास पर बैठ गया।

महाराज सावन सिंह जी ने अंदर ही उसे बताया कि तुम यहाँ से डेढ़ मील दाहिनी तरफ जाओ आगे पगडंडी मिलेगी फिर एक

गाँव आ जाएगा। रात उस गाँव में रूककर अगले दिन गाँव वालो से रास्ता पूछकर गुरुद्वारे चले जाना। वे उसी तरह डेढ़ मील गए आगे पगडंडी आ गई गुरु ने जो निशान बताया था उन्हें वह निशान मिल गया। बूढ़ा रो रहा था। उसने लक्खासिंह सतसंगी से फायदा उठाया अब आप सोचकर देखें! वह बूढ़ा भी नज़दीक ही बैठा था, उसका कोई नहीं था उसे कौन बताए?

जब गुरु नानकदेव जी महाराज मक्का गए तो उस समय काजी रूकमदीन ने आपसे सवाल किया, ''आप मुर्शिद और कलमें पर बहुत जोर देते हैं मुर्शिद-गुरु किस जगह मदद करता है इस पर थोड़ी सी रोशनी डालें?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''उस नदी का जिक्र आपकी कुरान में भी आता है कि उसमें दोजक की आग जलती है। हिन्दु शास्त्रों में उसे बेतरणी नदी कहा गया है। उस नदी में बहुत गलीजत भरा पानी, खून और पाक बहता है। वह ऐसी नदी है जिसमें से जीव को गुजरना पड़ता है सिर पर बोझ होता है यमदूत डंडे मारते हैं।''

गरुड़ पुराण में इसका खोलकर जिक्र किया गया है कि अधर्मी पापी जीवों को यह नदी पार करनी पड़ती है। जहाँ से यह जीव निकलता है वह रास्ता बाल से भी ज्यादा बारीक है। सिर पर पापों-पुण्यों का बोझ है। यमदूत डंडे मारते हैं प्यास लगती है दुःखी होता है फरियाद करता है कि मुझे पानी दें प्यास लगी है। यमदूत कहते हैं, ''तुझे पानी तो मिल जाएगा लेकिन तू हमें अपने पुण्य दे।'' जिन महात्माओं ने देखा है वे जिक्र करते हैं, हमें डराने के लिए ऐसा नहीं कहते। कबीर साहब कहते हैंः

कबीरा गागर जल भरी, आजकाल जाए है फूट।
गुरु जिन चेतया आपणा, से आध मांझ लीजेंगे लूट।

यह देह कच्ची गागर है। पता नहीं कब साँस की गतिविधि रूक जाए! जिन्होंने गुरु से नाम नहीं लिया, गुरु पर भरोसा नहीं किया, गुरु पर प्रतीत नहीं की वे नदी के इस पार ही लूट लिए जाएंगे; यमदूत डंडे मारकर पुण्य छीन लेते हैं।

जिस तरह कोई आदमी कत्ल करता है तो पुलिस वाले उसे मारते हैं, उसका सारा धन-दौलत अपने कब्जे में कर लेते हैं। वह जब अदालत पहुँचता है तो उस बेचारे के पास कुछ भी नहीं होता; अदालत सजा दे देती है। यही हालत है यमदूत डंडे मारते हैं कि तूने दुनिया में अत्याचार किया। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

तिनके मुख यम पल-पल थूके।

यमदूत उसके मुँह पर थूकते हैं कि तुझे इंसान बनाया था लेकिन तूने जुल्म और कत्लोगारत की।

बे पीरा बे मुर्शिदा कोई न पूछे बात।

जिसका कोई गुरु पीर खसम खसाई नहीं उसकी कोई बात नहीं पूछता। मैं यहाँ की मिसाल दिया करता हूँ अगर हम यहाँ से हवाई जहाज में अमेरिका जाएं बेशक हमने अपने सतसंगियों को मना किया है कि कोई भी एयरपोर्ट पर न आए फिर भी प्रेमी दस-बारह घंटे का सफर करके एयरपोर्ट पर आए हुए होते हैं। जब हम यहाँ वापिस आते हैं चाहे संगत को मना किया होता है कि कोई आदमी एयरपोर्ट पर न आए फिर भी कुछ प्रेमी खड़े होते हैं। ये हमारे अपने हैं तभी आकर खड़े होते हैं। जिनका कोई नहीं होता वे बेचारे पर्स हाथ में लटकाए चुप करके चले जाते हैं।

यह तो दुनिया की मिसाल है इसी तरह जिस आत्मा का कोई गुरु पीर नहीं उसको वहाँ कौन लेने आएगा, उसे कौन बचाएगा?

अगर गुरु है नाम है तो नाम हमारी रक्षा करेगा गुरु हमें लेने आएगा। ये कहानियां नहीं हैं हम रोज ही देखते है और प्रेमियों के पत्र भी पढ़ते हैं।

गंगानगर का एक प्रेमी सतसंगी था। वह मेरे पास बीस-पच्चीस साल आता रहा उसकी लड़की बाल विधवा थी। वह काफी बुजुर्ग हो गया था। उस समय इस इलाके में नहरें नहीं थी, मेरे पास आना बहुत मुश्किल था। उसकी लड़की खेत में साग तोड़ने गई तब उसने मुझसे कहा कि आप मुझे अपने हाथ की थोड़ी सी चाय दे दें। उसके अंदर प्रेम-प्यार था उसने चाय पी ली। सच्चाई तो यह है कि उसका अंत समय था। वह बीमार नहीं था उसे कोई दुःख-तकलीफ नहीं थी। वह चाय पीकर आगे खेत में गया, वहीं लुढ़क गया। उसे जीप में डालकर घर लाए उसकी सुरत 'शब्द' के साथ लग गई। जब सुरत शब्द के साथ लग जाती है तो इंसान मोह तोड़ देता है। वह किसी कीमत पर नहीं बोलता उसे यह दुनिया अच्छी नहीं लगती। उसकी सत्तर-बहात्तर साल की बहन आकर कहने लगी कि यह एक बार बोल पड़े। मैंने कहा, ''तुम सारी जिंदगी बोलते ही रहे हो अगर अब नहीं बोलोगे तो क्या हो जाएगा?''

मैंने उस परिवार से कहा, ''अगर तुम लोग इसकी सच्ची सेवा करना चाहते हो तो इसके पास बैठकर सिमरन करो इसे कुछ मत कहो। इसे कोई दवाई न दो, न ही हिलाओ। इसे अपने साँस पूरे करने हैं जब जाएगा नब्ज ढ़ीली हो जाएगी या रूक जाएगी मालिक की मौज हुई यह बोलकर भी जा सकता है।''

ऐसे ही सतसंग लगा हुआ था मैंने कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि गुरु नहीं आता वे जाकर नत्थू को देखें। छह दिन तक उसकी सुरत लगी रही। हमारे बहुत से आदमी जो यह तो दावा

करते हैं कि हम सतसंगी है वे कहते कि नत्थू को टीका जरूर लगवाओ इसके मुँह में दूध डालो। उसके बच्चों पर मेरा पूरा असर था उन्होंने किसी भी आदमी को नजदीक नहीं आने दिया। वे सिमरन करते रहे, छह दिन बाद नत्थू ने सुबह अमृतवेले शरीर छोड़ दिया। उसके बच्चों ने कहा, ''आओ भाईओ! अब जो क्रियाक्रम करना है कर लो।''

मैं नत्थू के क्रियाक्रम पर बैठने के लिए गया। महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा सवा सौ साल का एक बुजुर्ग साहब दयाल था। उसने सोचा! नत्थू ने मेरे पैरों को हाथ लगाया था तो वह बुढ़ापे में शरीर छोड़ गया है मैं भी इनके पैरों को हाथ लगा लेता हूँ। वह जैसे ही मेरे पैरों को हाथ लगाने लगा तो मैंने उसे प्यार भरे लहजे से कहा, ''देख! जैसे नत्थू के साथ हुआ है तेरे साथ भी वैसा ही होगा।'' उसने बड़ी जल्दी से अपने हाथ वापिस खींच लिए तीसरे दिन वह शरीर छोड़ गया। जो कमाई करते है वे सच्चे दिल से माँगते हैं, जिन्होंने कमाई नहीं की वे ऊपर से ही बातें करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि लोग बाहर से तो बहुत बातें करते हैं लेकिन अंदर से जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता। आप एक मिसाल दिया करते थे कि एक लड़की बीमार थी। उसकी बूढ़ी माता का उससे बहुत मोह था वह रोज कहती, ''महाराज! मुझे ले चलो मैंने बहुत खा-पी लिया है, बहुत कुछ देख लिया है। इसके छोटे-छोटे बच्चे हैं इसे छोड़ दो।'' मालिक की मौज एक दिन गाय बाहर से घर के अंदर आ गई उसने खाने के लिए इधर-उधर देखा उसे कुछ खाने के लिए नहीं मिला। वहाँ एक हांडी पड़ी थी गाय ने उस हांडी में मुँह डाला तो वह हांडी उसके सींगो में फँस गई। बूढ़ी माता को लगा कि मौत का फरिश्ता जिसे मैं

रोज बुलाया करती थी वह मुझे लेने आ गया है। वह जल्दी से बोली कि बीमार तो वहाँ पड़ी है मैं तो बूढ़ी हूँ; लेकर जाना है तो उसे ले जाओ। स्वामी जी महाराज का शब्द सुनने वाला है गौर से सुनेंः

मन हुआ निर्मल चित हुआ निश्चल। काम क्रोध गये इन्द्री निष्फल।

मैंने ऊपर बताया था कि इन दुष्टों से माता-पिता, बहन-भाई, धन-दौलत कोई भी नहीं छुड़वा सकता। हम किसी महात्मा की सोहबत-संगत करके ही इन दुष्टों से बच सकते हैं।

आप प्यार से कहते हैं, ''जब सतगुरु ने नाम दिया हम अंदर गए कमाई की नाम के साथ जुड़े तो जो मन पापों से मैला हो गया था वह निर्मल हो गया; आत्मा पवित्र हो गई। काम, क्रोध कम हो गया शान्ति आ गई। जो मन पहले सतगुरु से प्यार नहीं करता था अब वह प्यार से बंध गया है, अंदर जाना ही पसंद करता है और बाहर की दुनिया के सामान, मान-बड़ाई को किसी भी कीमत पर खरीदने के लिए तैयार नहीं।''

धरन छोड़ सुर्त चढ़ी अकाशा। शब्द पाय आई महाकाशा।

जब सतगुरु के प्यार की चिंगारी लगती है तो सुरत स्थूल दुनिया को छोड़कर अंदर चली जाती है, आकाश में पहुँच जाती है और वहाँ से और ऊपर चली जाती है, शब्द के साथ जुड़ जाती है। मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत के पहले-पहले अभ्यास मुश्किल होते हैं जिस तरह पहले अंदर जाना मुश्किल होता है ख्याल को तीसरे तिल पर ठहराना मुश्किल होता है बाद में आसान हो जाता हैं क्योंकि कुछ रस मिलता है हमारी रोज की आदत हो जाती है।

शब्द संग नित करे बिलासा। देखे अचरज बिमल तमाशा।

जिस तरह कोई परदेस में जाकर अपने सज्जनों-मित्रों, भाई-बहनों, माता-पिता को याद करके व्याकुल होता है लेकिन जब घर आ जाता है तो ख़ुशी मनाता है। इसी तरह जब सुरत अंदर जाकर शब्द के साथ जुड़ जाती है तो इसे भी ख़ुशी और प्यार महसूस होता है जो बयान नहीं किया जा सकता, उसे केवल आत्मा ही महसूस कर सकती है।

छोड़ा यह घर पकड़ा वह घर। खोया जग को पाया सतगुरु।

आप कहते हैं कि नाम भक्ति में यह बल है कि हम जिन घरों को नहीं छोड़ नहीं सकते थे उन घरों को प्यार से छोड़ दिया। महात्मा यह नहीं कहते कि आप इन घरों को छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में चले जाएं, बच्चों को छोड़कर कहीं दौड़ जाएं बल्कि महात्मा तो यह कहते हैं कि परमात्मा ने आपको जो जिम्मेवारियां दी हैं उन्हें निभाएं। आप अपने ख्याल को घरों, बच्चों से हटा लें।

अगर आप कोई जगह खोदकर गुफा में बैठ जाएं लेकिन आपका मन पुत्र-पुत्रियों, कौमों-मजहबों में फिरता है तो आप समझ लें कि आप निपट संसारी हैं अगर आपका मन प्रभु के चरणों में लगा हुआ है फिर चाहे आप बाजार में फिरते हैं आप पूरे साधु हैं। ऐसे प्रेमी दुनियां के घरों की आशा छोड़ देते हैं कि मैंने एक दिन यहाँ से चले जाना है। जिस घर सच्चखंड में जाकर सदा रहना है उसकी दिल के अंदर आशा रखते हैं लेकिन उनका चित्त अपने गुरु के चरणों में लगा रहता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मुख की बात सगल स्यों करदा, जीव संग प्रभ अपने धरदा।

आजकल तो जगह-जगह नल लगे हुए हैं लेकिन हरियाणा और राजस्थान में आपको अभी भी ऐसा वातावरण मिल जाएगा

कि लड़कियाँ दूर-दूर टोलियों में जाकर कुएं से पानी लाती हैं। वे एक-दूसरे से बात करती हैं लेकिन उनका ख्याल घड़े में रहता है कि कहीं ऊँची-नीची जगह पर पैर फिसल गया तो घड़ा टूट जाएगा। इसी तरह जो नाम के साथ जुड़ जाते हैं वे हमेशा अपने ख्याल को गुरु के साथ नाम के साथ जोड़कर रखते हैं।

हमने जिन घरों, कौमों को छोड़ जाना है उनकी खातिर दिन-रात लड़ने-झगड़ने में लगे हुए हैं कि यह मेरा घर है, यह मेरी जायदाद है, यह मेरा मकान है। हमसे पहले कितनी दुनिया हो चुकी है और कितनी अभी होनी है। मैं अक्सर कहा करता हूँः

धरती कंजरी वांग न खसमड़ी है, कई एसदे बण बणा गए।
कई कै करके इसनू छड्ड गए, कई मुड़ चट्टण वाले आ गए।

हमसे पहले बड़े-बड़े राजा, महाराजा, डिक्टेटर हुए हैं अगर वे धरती, जायदाद, बेटे बेटियों को साथ ले जाते तो ये सब हमारे हिस्से में न आते।

महाराज कृपाल का पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ अच्छा प्यार था। एक बार महाराज कृपाल ने पंडित नेहरू से कहा, ''पंडित जी! क्या कभी आगे के बारे में सोचा है, क्या कभी नाम के बारे में भी सोचा है कि मैं क्या काम करता हूँ?'' पंडित जी ने कहा, ''वैसे तो आपकी बात ठीक है लेकिन मैं हिन्दुस्तान का प्रधानमंत्री हूँ अगर मैं ही नाम जपने लग गया तो हिन्दुस्तान का कारोबार कैसे चलेगा? मुझे ऐसा कोई दिखाई नहीं देता जो हिन्दुस्तान की बागडोर संभाल सके।'' महाराज कृपाल ने हँसकर कहा, ''पंडित जी! कई हिन्दुस्तान के मालिक बने और पता नहीं कितनों ने ही इसका मालिक बनना है। हिन्दुस्तान यहीं रहेगा हो सकता है तुम और मैं न रहें।'' सन्तों का समझाने का अपना ही तरीका होता है। थोड़े

दिन बाद ही किसी प्रेमी ने बताया कि उसने रेडियो पर खबर सुनी है, पंडित जी ग्यारह बजे चल बसे हैं।

अभी अर्थी वहीं पड़ी होती है कि संभालने वाले पहले ही आ जाते हैं। सतगुरु की दया से यह पता लगा कि हम जिस देह में बैठे हैं यह किराए का मकान है, नाशवान है। पता नहीं कब इसे छोड़ जाना है? सच्चे प्रेमी दिल से चाहते हैं कि अंत समय आए; जिस घर में जाना है उसके साथ प्यार है कि कब वहाँ पहुँचे!

जब से सतगुरु सरना लीन्हा। सत्तनाम धुन घट में चीन्हा।

दुनिया की मौहब्बत कम हो गई और गुरु का प्यार जाग गया। गुरु ने नाम दिया, 'शब्द' अंदर प्रकट है। दुनिया का ख्याल अपने आप ही भूल गया है। यह गुरु की दया है, बड़ाई है गुरु के मिलने के फायदे हैं।

धन सतगुरु धन उनकी संगत। जिन प्रताप पाई मैं यह गत।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मेरा सतगुरु धन्य है। ऊँचे भाग्य से उनकी संगत मिली जिसके प्रताप से मैं सच्चखंड पहुँच गया हूँ और जीवन-मरण खत्म कर लिया है अगर गुरु न मिलता तो क्या हालत होती?''

गुरु नानकदेव जी महाराज बड़े लहजे से अपने गुरु का धन्यवाद करते हुए कहते हैं, ''जिन्होंने मिश्री खाई है वे ही मिश्री का स्वाद बता सकते हैं जिन्होंने नहीं खाई उन्हें क्या पता है?'' हम कह देते हैं कि गुरु की क्या जरूरत है क्योंकि अभी हमारी किस्मत नहीं जागी। बानी में जगह-जगह गुरु गुरु ही आता है:

धन धन कुल धन धन जननी जिन गुरु जनया माए।

धन धन सतगुरु जिन नाम आराधया।
आप तरया जिन्हां डिट्ठा तिन्हां लऐ छुड़ाए।

आप गुरु के माता-पिता को भी धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने ऐसे सच्चे-सुच्चे बच्चे को जन्म दिया। ऐसा सूरमा बेटा पैदा हुआ जिसने विषय-विकारों, मान-बड़ाई को लात मारकर नाम की कमाई की। परमात्मा ने उस पर बख्शीश की उसे ईनाम दिया वह खुद तर गया और उसके अंदर ऐसी ताकत रख दी कि जो उसे श्रद्धा और प्यार से देख लेगा वह भी तर जाएगा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि परमात्मा ने सन्तों पर बख्शीश की होती है अगर कीड़ा भी सन्तों से टकराकर मर जाए तो वह एकदम इंसानी जामें में आता है चौरासी में नहीं जाता। अगर सन्त ऊँट या घोड़े की सवारी कर लें या किसी पेड़ का फल खाएं तो उन्हें इंसानी जामा मिलता है। परमात्मा ने उन पर दया की होती है, यह कुदरत का उसूल है।

कर सतसंग काज किया पूरा। पाप नसे मानो खाया धतूरा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारे ऊँचे भाग्य थे कि हम पूर्ण सन्तों की सोहबत-संगत में गए हमारे पाप खत्म हो गए।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

महिमा साधु संग की सुनो मेरे मीता।
मैल गई कोट अग्ग हरे निर्मल भए चीता।

साधुओं की संगत का यह फायदा है कि साधु की संगत में जाकर हमारे सारे पाप खत्म हो जाते हैं।

पाप पुन्य दोउ गये नसाई। भक्ति भाव जिव हृदय समाई।

गुरु की संगत में आने और नाम लेने से यह फायदा हुआ कि अब दिल में न पाप के लिए जगह है और न पुण्य के लिए जगह है। न अब स्वर्ग माँगता है और न ही नर्क से डरता है। गुरु से मिलने का यह फायदा है कि अब कोई डर नहीं और दुनिया के साथ प्यार नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

चल ले स्वर्ग तुझे ले तारु हित हित चित के चाबुक मारुं।

कमाई वाला स्वर्ग को कहता है कि मैं तुम्हें चाबुक मारकर तार सकता हूँ। नाम तो बहुत बड़ी दौलत है।

पलटू साहब कहते हैं कि लोग स्वर्गों की आशा लगाते हैं स्वर्ग पाने के लिए अपना आप भी बेच देते हैं लेकिन अंदर जाने वाला साधु स्वर्ग को इन्द्रासन को कुछ भी नहीं समझता। इन्द्र भोगी है, भोग तो इस मंडल में भी हैं। अंदर जाकर देखें! फिर नीचे के मंडलों को देखने का भी मन नहीं करेगा।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि स्वर्गों में क्या है? सूक्ष्म देश में त्रिकुटी और सँहसदल के बीच एक ऐसी जगह बनाई हुई है जहाँ काल ने आला दर्जे की सहूलियतें रखी हुई हैं। जो लोग यहाँ पुण्य करते हैं जिनका चरित्र अच्छा है। वे आत्माएं सूक्ष्म शरीर में वहाँ जाकर अपना वक्त पूरा करती हैं और जब इनके पुण्य खत्म हो जाते हैं तो इन्हें वापिस यहाँ आना पड़ता है।

इस देही को सिमरे देव सा देही भज हर की सेव।
भजो गोविंद भूल मत जाओं मानस जन्म का ऐही लाहो।

हम समझते हैं कि देवता ऊँचे हैं लेकिन देवता भी इंसानी जामें को तरसते हैं। आपने गाड़ी के फर्स्ट क्लास में सफर करके देखा होगा उसमें थोड़ी बहुत सहूलियत है। हवाई जहाज के फर्स्ट

क्लास में सफर करके देखा होगा उसमें दूसरों से ज्यादा सहूलियत होती है लेकिन हमने जहाँ तक का किराया दिया है स्टेशन आने पर उतरना पड़ता है। मौत पैदाईश ईर्ष्या भोग विलास स्वर्गों में भी है।

जो नाम की कमाई करते हैं उनके दिल में न पाप के लिए जगह है न पुण्य के लिए जगह है। वे नाम जपते हैं गुरु के साथ प्यार करते हैं यही उनका भजन है। भजन कर लिया पुण्य है गुरु का मुँह देख लिया पुण्य है, इससे ज्यादा उनका कोई पुण्य नहीं है।

ऐ ही पुण्य प्रेमी समझो ते सन्मुख यार खड़ोवे।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज सुखमनी साहब में कहते हैंः

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म हर का नाम जप निर्मल कर्म।

सब धर्मों से ऊँचा धर्म 'शब्द-नाम' की कमाई है।

अब यह सतसंग गुरु का पावे। हिल मिल चरन माहिं लिपटावे।

जब नाम की कमाई करते हैं तो दिल के अंदर पाप-पुण्य की जगह खत्म हो जाती है। गुरु का प्यार जाग जाता है। सोते-जागते कोई भी कार्य करते हुए सतसंग को ही मुख्य बना रखा है। जाता भी सतसंग में है आता भी सतसंग में है; सतसंग को ही मामूल बना लिया है।

चरन सेव चरनामृत पीवे। गुरु परशादी खा नित जीवे।

यह बहुत सोचने वाली बात है कि सतसंग में वही जाएगा जिसको अपने ऊपर तरस और रहम है। उसे परमात्मा बख्श देता है कि तूने सतसंग में जाना है, अपना जीवन बनाना है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

कई कोट मांगे सतसंग पारब्रह्म तिन्ह लागो रंग।

करोड़ो ही आदमी दिल से सतसंग मांगते हैं। जिन्हें सतसंग मिल जाता है उनके ऊपर सतसंग का रंग चढ़ जाता है। जो सतसंग में जाते हैं कमाई करते हैं उनके दिल के अंदर सतगुरु का प्रबल प्यार जाग जाता है। वे सतगुरु के आगे विनती करते हैं कि महाराज जी! हमें चरणामृत दो, प्रशादी दो; हमारे ऊपर दया-मेहर करो।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त अपनी जिंदगी में किसी को चरणामृत नहीं देते प्रशाद दे देते हैं।'' प्रशाद को भी कोई भाग्यशाली जीव ही समझता है। प्रशादी कई तरह की है। सन्त अपने हाथ से कोई कपड़ा दे दें वह भी प्रशादी है चाहे कोई और चीज़ दे दें वह भी प्रशादी है अगर हम उनकी दी हुई प्रशादी श्रद्धा से रखते हैं तो हमारे अनेकों पापों का नाश हो जाता है, हमारा बेड़ा पार हो जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मैं जब आगरा गया तो मैंने स्वामी जी के भाई सेठ प्रताप सिंह (जो चाचा जी के नाम से मशहूर थे) के आगे विनती की, ''महाराज जी! मुझे पीने के लिए चरणामृत दें।'' आपने कहा, ''प्रशाद दे दूँगा लेकिन चरणामृत नहीं दे सकता।'' महाराज सावन ने कहा, ''क्या मैं अधिकारी नहीं क्या मेरे अंदर कोई ऐब है?'' उन्होंने कहा, ''मेरे पास इतनी कमाई नहीं।''

पहले डेरा ब्यास जाने के लिए सड़क नहीं थी जिससे संगत को परेशानी होती थी। हमारी आर्मी ने बहुत मिन्नत करके महाराज सावन से सड़क बनाने की सेवा मांगी थी। हमारा कमांडर सच्चे दिल से महाराज सावन का नामलेवा और बहुत प्यारा था। हमें सड़क बनाने की सेवा दे दी गई। जिन लोगों ने महाराज सावन को देखा है उन्हें पता है कि आप बहुत मेहनती थे, आप छोटे से छोटा

काम भी खुद आकर देखते थे। जब हम सड़क बना रहे थे तो आप सेवकों से रोटियां उठवाकर ले आते हालांकि हमने मना किया था कि हमें सरकारी राशन मिलता है संगत क्यों दुःख उठाए। आप कहते, ''हमने अपना काम करना है तुमने अपना काम करना है।''

एक दिन आप खाना लेकर आए। मेरे पास एक चादर थी जब महाराज सावन कुर्सी पर बैठने लगे तो मैंने वह चादर आपके नीचे बिछा दी। आपने हमें अपने हाथ से रोटी और शक्कर दी सबने प्यार से खाई। जब आप उठने लगे तो आपने मुझे बुलाकर अपने हाथ से वह चादर दे दी। जब परमपिता कृपाल मेरे पिछले गांव के आश्रम में आए तो वही चादर उनके नीचे बिछाई और उन्हें बताया कि यह चादर कुलमालिक सावन के हाथों की दी हुई है; यह तो अपनी-अपनी श्रद्धा और प्यार है।

जब महाराज कृपाल ने घर-बार छुड़वाया, आपने मुझे पगड़ी भी नहीं उठाने दी। मैंने महाराज जी से विनती की कि वह चादर ले लूं; मैंने वह चादर अभी भी संभालकर रखी हुई है।

सन्त देने के लिए आते हैं किसी से लेने के लिए नहीं आते, बच्चों पर बोझ नहीं बनते। मैंने यह बात पहले कई बार बताई है कि मेरी भान्जी ने परमपिता कृपाल के बर्तन साफ किए। उस समय पैसा काफी मायने रखता था, महाराज कृपाल ने उसे दस रूपये का नोट दिया। वह न-न करने लगी तो मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने उससे कहा, ''कमलिए! यह प्रशादी भी न करने वाली है।'' उसने मेरे कहने पर दस रूपये का नोट तो ले लिया लेकिन अब वह बेचारी बहुत पछताती है कि मैंने गलती की।

महात्मा किसी को चरणामृत नहीं देते प्रशादी दे देते हैं अगर वह आपको कोई भी चीज़ देते हैं उसमें आपका फायदा है भला है।

दर्शन करे बचन पुनि सुने। फिर सुन सुन नित मन में गुने।

आप कहते हैं, ''जिन्हें सतसंग का रस आ गया सतगुरु पर भरोसा आ गया वही कहना मानते हैं। सतगुरु जो वचन कहते हैं वे उनके एक-एक लफ्ज़ को हृदय में बसाते जाते हैं ऐसा नहीं कि एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया।''

गुन गुन छाँट लेय उन सारा। सार धार तिस करे अहारा।

जो सन्तों के एक-एक वचन को अपने ऊपर लागू करता है कि मेरे अंदर जो गलतियाँ हैं मुझे छोड़ देनी चाहिए। वह सतगुरु के अच्छे गुणों को धारण करता है, ऐबों को छोड़ना शुरू कर देता है।

कर अहार पुष्ट हुआ भाई। जग भौ लाज अब गई नसाई।

जब हृदय अमृत वचनों से भर जाता है तो आत्मा में ताकत आ जाती है। दुनिया की लोकलाज का डर खत्म हो जाता है। ऐसा प्रेमी दुनिया की मान-बड़ाई प्राप्त करके ख़ुश नहीं होता और न ही लोगों की निन्दा से डरता है। उसे तो परमात्मा से मिलने का शौक होता है अगर लोग निन्दा करते हैं तो वह हंसता है कि ये मेरा भार हल्का कर रहे हैं।

गुरु भक्ति जानों इश्क गुरु का। मन में धसा सुरत में पक्का।

गुरु भक्ति सच्चा इश्क, सच्चा प्यार है। वे जीव ऊँचे भाग्य वाले होते हैं जिनकी आँखों में एक बार गुरु का स्वरूप समा गया चाहे उन्होंने सारी जिंदगी लगा दी लेकिन स्वरूप अलग नहीं हुआ। कबीर साहब कहते हैं:

जब तुम आवे आँख में आँख झाप में लूं।
न मैं देखूं ओर को न तुझे देखन दूं।

ऐसे प्रेमी हमेशा ही गुरु के आगे मिन्नतें करते हैं कि तू एक बार मेरी आँखो में आ जा मैं आँखे बंद कर लूंगा, न मैं खुद देखूंगा और न तुझे किसी को देखने दूंगा; यह मेरा प्यार है। यह प्यार उन लोगों का है जो दिन-रात गुरु के वचनों पर चलते हैं, जो अपना आप गुरु पर न्यौछावर करते हैं वे सच्चे आशिक हैं। गुरु जो कहता है उसे करने के लिए तैयार हैं और जिंदगी में करते हैं।

पक पक घट में गाड़ा थाना। थान गाड़ अब हुआ दिवाना।

ऐसे प्रेमियों पर दुनिया की चोटों और दुनिया के दुःख-सुख का कोई असर नहीं पड़ता। मैं कहा करता हूँ कि हम सब बातें करते हैं लेकिन जब दुःख आ जाए तो पता चलता है कि कौन साबुत दिल रहता है। जब तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ टूट जाते हैं। मैं सुख के बारे में बताया करता हूँ कि जिस इंसान को जिंदगी में आसानी से हर किस्म के सुख प्राप्त हो, मालिक ने कोई कमी न रखी हो वह त्यागी बने तो आप उसे सच्चा त्यागी समझें। जिसे सुख मिले ही न हों और पैसे-पैसे के लिए तड़पते फिरते हैं तो वह कैसे त्यागी हैं? जब चार पैसे आ जाएंगे तो त्याग खत्म हो जाएगा। दुनिया माथा टेकेगी उस समय मान-बड़ाई में फँस जाएंगे। मन धोखा दे जाएगा कि पता नहीं मैं क्या हूँ?

अमेरिका में सन्तबानी आश्रम महाराज कृपाल का हैडक्वाटर है। यह दो सौ एकड़ में स्वर्ग की तरह बना हुआ है। मैं जब पहली बार वहाँ गया इस आश्रम को दुल्हन की तरह सजाया हुआ था। जब मैंने आश्रम में पहला कदम रखा तो रसल पर्किन्स ने कहा, ''यह आपका है आपके लिए है।'' मैंने कहा, ''मैं यहाँ अपने गुरु का संदेश देने के लिए आया हूँ। मेरा इन चीज़ो से कोई मतलब नहीं, लगाव नहीं। मेरे पास अपने गुजारे के लिए सब कुछ है

अगर मेरे पास दस आदमी आ जाते हैं तो आसानी से उनकी भी गुजर हो जाती है। आपके पास पाठी बैठा है। जब यह मेरे पिछले गाँव आया इसके साथ इसका परिवार भी था। ये लोग रात को रहे इन्होंने खाना खाया। सुबह ये लोग सेवा डालने लगे तो मैंने हाथ जोड़कर कहा कि आप लोगों ने जितना खाया है उतना और उससे ज्यादा तो आमतौर पर यहाँ हो ही जाता है।''

रीसां करे तनाड़ियां जो साहब दर खड़ियां।

हम उन लोगों की नकल करते हैं जो मालिक से मिल जाते हैं ऐसी हालत उन लोगों की हैं जिनके अंदर सच्चा प्यार सच्ची मौहब्बत जाग जाती है। वे अंदर से पक्के हो जाते हैं और दुनिया के किसी हालात में घबराते नहीं क्योंकि परमात्मा ने उन्हें सब कुछ पहले से ही दिया होता है कि किसी न किसी तरह गुरु से बनी रह जाए।

गुरु का रूप लगे अस प्यारा। कामिन पति मीना जल धारा।

जिस तरह मछली को पानी से प्यार है, पानी से निकालते ही तड़पकर मर जाती है उसी तरह जब शिष्य के दिल में गुरु का प्यार पक्का हो जाता है अगर ऐसा शिष्य एक सैकिंड भी गुरु को भूल जाएं, सिमरन भूल जाएं तो वह भी मछली की तरह तड़पता हैं?

जिस तरह पतिव्रता औरत पति के प्यार को नहीं भूलती। चाहे वह मायके जाकर कितना भी समय रहे लेकिन उसका दिल पति के चरणों में लगा रहता है, यही हालत उस गुरसिक्ख की है। स्वामी जी महाराज दुनियावी मिसालें देकर समझाते हैं।

सतसंग करना ऐसा चाहिये। सतसंग का फल येही सही है।

आप कहते हैं कि ऐसा सतसंग करना है चाहे पीछे आवाज हो तो भी पीछे नहीं देखना चाहिए। गुरु की तरफ उनके स्वरूप का

भौरा बनकर बैठें यही सतसंग का फल है और सतसंग में आने का फायदा है। जो लोग इस तरीके और साधन से सतसंग करते हैं वे जरूर कामयाब होते हैं।

मैं जब शुरू में महाराज सावन सिंह जी के सतसंग में गया तो मैंने यही कुछ देखा जिसका मुझ पर बहुत असर हुआ कि किस तरह लोग भँवरे बने बैठे थे। आँख नहीं झपकते थे इधर-उधर झाँकने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। पश्चिम से अंग्रेज आते हैं उन्हें मेरी भाषा समझ नहीं आती जितनी देर भी सतसंग होता है वे आंख से आंख मिलाकर रखते हैं हिलते नहीं चाहे अकड़ जाएं।

एक बार की बात है ग्रुप में कुछ आदमियों ने आकर कहा कि आप कुछ न बोलें हमें कुछ देर रस लेने दें। अब आप देखें! उन्हें कौन सी चीज़ रस देती है। यहाँ जिन लोगों को मेरी भाषा समझ आती है वे सतसंग में कभी घुटना इधर करते हैं कभी उधर करते हैं कभी ऐसे मुँह करते हैं कभी वैसे मुँह करते हैं ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने उनकी तरह हृदय नहीं बनाया।

आर्मी में जब हमें अटेंशन कर देते थे तो हम हाथ भी नहीं हिला सकते थे। हमसे कहा जाता था कि चाहे आपके ऊपर साँप भी चढ़ जाए तो हिलना नहीं। सन्तमत में इस लफ्ज़ से मुझे बहुत मदद मिली। हम लोगों को इसी तरह घंटा-घंटा अटेंशन खड़ा किया जाता था। हम दुनियावी हुक्म की इतनी कद्र करते हैं तो गुरु का हुक्म मानने में क्या हर्ज है?

सतसंग सतसंग मुख से गावें। करें चित्त फल कछू न पावें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हम सब सतसंग सतसंग करते हैं लेकिन जब हमें फल प्राप्त होता हुआ नजर नहीं आता तो

हम घबरा जाते हैं। क्या हमने कभी सोचा! हमारे अंदर क्या नुख्स है जो हम कामयाब नहीं होते?

सतसंग महिमा है अति भारी। पर कोइ जीव मिले अधिकारी।

आप कहते हैं कि सतसंग की महिमा बयान नहीं की जा सकती, जुबान को यह ताकत नहीं कि सतसंग की महिमा बयान कर सके लेकिन **अधिकारी** जीव नहीं मिलता।

मैं बताया करता हूँ कि वे भाग्यशाली सन्त होते हैं जिन्हें जिंदगी में **अधिकारी** मिल जाता है। वे अधिकारी को ढूंढने के लिए जंगलों, पहाड़ो, रेगिस्तानों, समुद्रों में चले जाते हैं। जब अधिकारी मिल जाता है तो उससे कुछ भी नहीं छिपाते; वे उसे सब कुछ सौंप देते हैं। अधिकारी नहीं मिलते **अधिकारी** मिले तो वे सब कुछ देने के लिए तैयार हैं फिर पता लगता है कि सतसंग का क्या फल है?

एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूं ते आध।
कबीरा संगत साध की काटे कोट अपराध।

हमारा शरीर सतसंग में बैठा होता है लेकिन हमारा मन बाजारों खेतों में फिरता है। सन्त सतसंग में जो कहते हैं हम उसे मानने के लिए तैयार नहीं, हम मन के मुरीद हुए बैठे हैं।

अधिकारी बिन प्रगट नहीं फल। सतसंग तौ कीन्हा सब चल चल।

हम सब सतसंग तो करते हैं लेकिन **अधिकारी** के बिना फल नहीं मिलता। मस्ताना जी को डेरे में कई लोग भला-बुरा कहते थे। कुछ लोगों ने तो उनके ऊपर गर्म पानी डाल दिया था। महाराज सावन ने कहा, ‘‘मस्तानेया! क्या माँगता है? तुझे बागड़ का बादशाह बना दें या पीर बना दें फिर आपने कहा जा तुझे बागड़ का बादशाह

बना दिया है। तूने मेरे आखिरी समय पर भी यहाँ नहीं आना।'' उस समय चालीस-पचास हजार लोग मौजूद थे लेकिन किसी ने भी इस बात को सच नहीं माना।

मेरे अलावा और भी बहुत से लोग इस बात को जानते हैं कि मस्ताना जी ने कितना धन-दौलत बाँटा। हमारी सरकार भी परेशान थी कि पैसा कहाँ से आता है। मस्ताना जी ने कहा, ''यहाँ सावन शाही मशीन है?'' जब मस्ताना जी बादशाह बने तो वही लोग परेशान हुए। किसी ने कहा कि यह रिद्धि-सिद्धि से काम लेते हैं लेकिन गुरु के वचन पर किसी को ऐतबार नहीं आया।

इसी तरह परमपिता कृपाल हमारे आश्रम में प्यार की मस्ती में बैठे थे। आपने कहा, ''किसी ने रब देखना है?'' सबने हाथ ऊपर कर दिए आपने फिर कहा कि अपनी आँखें बंद कर लो। सबने आँखे बंद कर ली लेकिन मैंने अपनी आंखें बंद नहीं की। अभी वे लोग यहाँ पर हैं जो उस समय मौजूद थे। एक ने शिकायत की कि इसने आँखे बंद नहीं की। महाराज जी ने मुझसे कहा कि ये तेरी शिकायत करते हैं तूने आँखे बंद नहीं की। मैंने कहा कि आपने कहा है कि जिसने रब देखना है वह आँखें बंद करे लेकिन जिसे रब दिख गया है उसे आँखे बंद करने की क्या जरूरत है?

महाराज जी ने कहा कि इसने राज़ को समझ लिया है फिर कहने लगे कि इसमें से महक आएगी, वह महक समुद्र पार कर जाएगी। अमेरिकन लोग इसे हवाई जहाजों में सैर करवाएंगे। उस समय जो लोग यह सुन रहे थे वे कहने लगे क्या इंसानों में भी कभी महक आई है? एक ने कहा कि इसे कोई जीप पर तो बिठाता नहीं हवाई जहाज पर कौन बिठाएगा? महाराज जी ने कहा कि मैंने जो कहना था वह कह दिया है।

उस समय तो किसी ने इस बात को सच नहीं माना। जब अमेरिका से अंग्रेज यहाँ आए तो वे 77 आर.बी. की मिट्टी उठाकर मुँह में डालने लगे और लोगों को बताने लगे कि यहाँ की मिट्टी अच्छी है। फिर लोग निन्दा करने लगे कि यह पढ़ा-लिखा नहीं है। यह डेरे नहीं आया। अब आप ही बताएं जिसे घर बैठे ही गुरु मिल जाए उसे डेरो में मत्था मारने की क्या जरूरत है! हमने गुरु को पकड़ना है, गुरु जो कहता है हम वह कर लें।

मैं जब दिल्ली गया तो जो भी व्यक्ति मेरे पास आया मैंने उससे पूछा, ''क्या मुझे कभी किसी ने दिल्ली में देखा था? हर मुल्क में जाकर पूछा क्या कोई मुझे पहले से जानता था? यह

परमपिता कृपाल का वाक था कि महक समुद्र पार कर जाएगी। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''पाताल में भक्ति करें तो आकाश में प्रकट हो जाती है।'' सुखमनी साहब में आता हैः

आठ पहर जो हर हर जपे, हर का भगत प्रकट न छिपे।

नाम की खुशबू लोगों को चढ़ जाती है। खुशबू लेने वाले बहुत नाक हैं फिर कोई इश्तिहार निकलवाने की या अखबार में एडवरटाइज करने की जरूरत नही। मैं एक अंधा पापी आदमी था मैं उसे नहीं जानता था। यह उसकी दया थी कि बचपन से ही उसकी याद बनाई हुई थी, वह उस याद से खिंचा हुआ आया क्योंकि दिल से दिल को राह होती है। उसे पता था कि कौन मुझे याद करता है कौन मेरी याद में बैठा है इसलिए वह बिना बुलाए आया।

बाबा जयमल सिंह जी कोहमरी की पहाड़ियों में सावन सिंह जी के पास बिना बुलाए ही गए थे अगर सेवक सच्चे दिल से एक बार बुलाता है तो वह जरूर चलकर आता है।

चल चल आये सतगुरु आगे। बचन न पकड़ा दरस न लागे।

सारे सेवक सतसंग में आते हैं लेकिन सन्त जो वचन बोलते हैं उन पर अमल नहीं करते। सतसंग में जो दर्शन मिलता है उसे अंदर नहीं बिठाते, आँखो में जगह नहीं देते।

सतसंग और सतगुरु क्या करें। सो जिव भौजल कैसे तरें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सतसंग और गुरु का क्या कसूर है? सन्त बताते हैं कि तेरा रास्ता यहाँ है लेकिन हम दूसरी तरफ जाते हैं तो भवजल से कैसे तरेंगे? कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बिचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।

पत्थर पानी लेखा बरता। जल मिसरी सम मेल न करता।

मिश्री पानी में डालने से घुल जाती है, पत्थर नहीं घुलता। इसी तरह प्रेमी आत्माओं पर वचन असर कर जाते हैं वे अपना जीवन बना लेते हैं बाकी हम पत्थर दिल लोग वचन को अपने अंदर बसने नहीं देते पत्थर जैसे हुए बैठे हैं।

बाहर का संग जब अस होई। सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई।

जब दिल में सच्चा प्यार जाग जाता है तब पता लगता है कि संसार में सतगुरु के समान कोई प्रीतम प्यारा हमदर्दी नहीं है।

तब अंतर का सतसंग धारे। सुरत चढ़े असमान पुकारे।

जब सन्त देखते हैं कि इसके दिल के अंदर सच्चा प्यार सच्ची तड़फ है तो सन्त पर्दा खोल देते हैं अंदर का सतसंग प्राप्त हो जाता है, अंदर शब्द चालू हो जाता है; यह भरपूर हो जाता है। अब गुरु है या आप है फिर यह जहाँ जाता है गुरु को साथ ही समझता है।

मैं बताया करता हूँ कि बंद मकान हो, तूफान चल रहा हो आप गुरु को याद करें आपका गुरु वहीं हाजिर होगा। वह आपके प्यार की कद्र जानता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब बंदा बंदे की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान हमारी मजदूरी रख सकता है।''

बोले अर्श और गरजे गगना। बैठा कुरसी मन हुआ मगना।
ला-मुकाम पाया लाहूत। छोड़ा नासूत मलकूत जबरूत।
हाहूत का जाय खोला द्वारा। हूतलहूत और हूत सम्हारा।
हूत मुकाम फकीर अखीरी। रूह सुरत जहाँ देती फेरी।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *कल आपने यह कहा था कि नामदान के समय गुरु शिष्य के संचित कर्मों का लेखा-जोखा अपने कब्जे में लेकर उन कर्मों को खत्म कर देता है। हम जैसे-जैसे अभ्यास में तरक्की करते हैं कुछ कर्म ऐसे भी होते हैं जो हमें ऊपर के मण्डलों में अभ्यास करके खत्म करने होते हैं तो क्या वे संचित कर्मों का ही हिस्सा होते हैं और गुरु संचित कर्मों का लेखा किस तरह खत्म करता है?*

बाबाजी: मुझे बहुत खुशी है कि यह बहुत फायदे और गहराई वाला सवाल है। हो सकता है कि ऐसा सवाल और भी कई प्रेमियों के दिमाग में घूम रहा होगा लेकिन इस सवाल को वही सतसंगी समझ सकते है जो अंदर जाते हैं।

मैंने महाराज सावन सिंह जी की यह बात कई बार बताई है। आप कहा करते थे, ''दुनिया कहती है कि हम सन्तों के पास जाते हैं लेकिन जब जीव सन्तों के पास जाकर 'नामदान' प्राप्त करके नाम की कमाई करते हैं तो वे अंदर जाकर खुद देख लेते हैं कि हम सन्तों के पास जाते हैं या सन्त हमें खींचते हैं? हम जब तक ऊपर के मण्डलों में नहीं जाते तब तक ही कहते हैं कि हम अभ्यास करते हैं, भजन करते हैं लेकिन जब हम ऊपर जाते हैं तो हमें पता लगता है कि कोई ताकत हमसे भजन करवाती है; कोई हमें उठा रहा है और अंदर से उद्यम भी बख्श रहा है।''

मैं यह भी बताया करता हूँ कि सन्त नामदान के समय हमारे अंदर कुछ इस तरह का बंदोबस्त कर देते हैं कि हमारे कुछ कर्म कटते रहते हैं और हम कुछ तरक्की भी करते रहते हैं। जिंदगी में

कई ऐसे भी कर्म आ जाते हैं जो बर्दाशत से बाहर होते हैं। भजन-अभ्यास करने से हमारी आत्मा में ताकत आ जाती है और हम उन कर्मों को बर्दाशत कर लेते हैं।

जब तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं उसी तरह जब कर्मों के वेग की घटना घटती है तो हम चिल्लाते हैं। कर्म हमारे बर्दाशत से बाहर हो जाते हैं। ऐसे समय में जो प्रेमी अभ्यास नहीं करते वे डोल जाते हैं लेकिन जो प्रेमी कमाई करते हैं वे इस राज़ को समझते हैं। तकलीफ उन्हें भी होती है लेकिन वे शिकायत नहीं करते, यह नहीं कहते कि हमारा दुख दूर करें बल्कि भाणें में मजबूत रहते हैं। वे जानते हैं कि जो भी कष्ट आ रहा है उससे हमारी सफाई हो रही है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

दुख की घड़ी गनीमत जानों, सुख में रहत सदा मन गाफिल।

सुख में मन गाफिल हो जाता है और दुख में मन नरम हो जाता है। सन्त यही कहते हैं कि ऐसे समय में अभ्यास करके फायदा उठाएं लेकिन हर सतसंगी का ऐसा ख्याल नहीं होता। कई प्रेमी तो मामूली सी तकलीफ में घबराकर प्रार्थनाएं करते हैं अगर उस समय उनकी मदद न हो तो वे खुष्क हो जाते हैं।

सन्त हमेशा यही जोर देते हैं कि अंदर जाकर कमाई करके खुद देखें। हमें अंदर जाकर ही समझ आती है कि गुरु किस तरह दया करता है, उसके दया करने का क्या तरीका है और वह किस तरह हमारे कर्म काटता है।

बाबा बिशनदास जी के पास 'दो-शब्द' का भेद था। आपने नीचे के दो मण्डलों का प्रेक्टिकल किया हुआ था। आपने अपनी दया दृष्टि से मुझे भी उन मंडलों का प्रेक्टिकल करवाया। पहले तो

आपने मुझे मेरे पिछले जन्म के बारे में जानकारी दी। उसके बाद जिसके साथ भी मेरा लेन-देन था वह भी पूरा करवाया। जिस माता-पिता ने मेरा पालन-पोषण किया था उनका मुझे खुद ही ज्ञान हो गया था कि मैंने इनका कितना देना है, मैं इनके बीच क्यों आया हूँ और इन्होंने मेरा क्या देना था? मैंने घर छोड़ने से कई साल पहले ही उन्हें बता दिया था कि मेरा और आपका कितना सम्बंध है, मैंने कितना समय आपके घर में रहना है और फिर मालिक की याद में लग जाना है।

दूसरी मंजिल वाले महात्मा को इतना ज्ञान हो सकता है तो आप सोचकर देखें! आपको तो पूरा रास्ता और पूरे सन्त मिले हुए हैं अगर आप आलस न करें तो आपको कितना ज्ञान हो सकता है? कमाई वाले सतसंगी संयम में रहते हैं। इनके पास कमाल का धीरज और अनुशासन होता है। ये कुदरती कानून के खिलाफ किसी भी घटना को नहीं रोकते बेशक कोई एक्सिडेंट होने वाला हो ये चमत्कार बिल्कुल नहीं दिखाते। कुदरती कानून के मुताबिक जो भी घटना घटती है ये उसे बड़ी आसानी से स्वीकार करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा सैंसी था। उसकी पत्नी काफी झगड़ालू थी, उसे बहुत परेशान किया करती थी। उसने एक बार महाराज सावन सिंह जी से बात की कि वह उसे भजन-अभ्यास भी नहीं करने देती। कभी-कभी डंडे भी मारती है अगर हम कमाई करके सन्तों से रुहानी सवाल पूछें तो वह कभी-कभी दया करके सेवक को जरूर इशारा कर देते हैं।

महाराज जी ने उससे कहा, ''देख प्यारेया! तू पिछले जन्म में कौआ था और तेरी पत्नी गधी की योनि में थी। तू इधर-उधर गंद में घूमता रहता था और यह धोबियों के पास रहती थी। जब तू गंद

में बैठता था तो तेरी चोंच गंदी हो जाती थी तू अपनी चोंच को इसकी पीठ पर मारकर साफ किया करता था। लेना-देना हर एक को पड़ता है। अब यह तेरी पत्नी बनी है और तू इसका पति बना है अगर अब तू यह लेखा निपटा लेगा तो बहुत अच्छा होगा।

मैं तकरीबन पंद्रह साल पहले संगरिया में कुछ दिन ठहरा था। मुझे यह प्रेमी वहाँ मिला। इन प्रेमियों ने अपना डेरा उठाकर दूसरी जगह जाना था। औरत ने उसे बहुत डंडे मारे और आदमी के मुँह में डंडा डालकर दबाया। मैंने काफी कुछ देखा आखिर मैं वहाँ बैठ गया। जब वे चलने लगे तो मैं भी उनके पीछे चल पड़ा। मैं उनके पीछे दो किलोमीटर तक चलता गया लेकिन मैंने उन्हें कुछ जाहिर नहीं होने दिया। इन्होंने मुझसे पूछा कि तुम हमारे पीछे-पीछे क्यों चल रहे हो, क्या तुम हमारी तहकीकात कर रहे हो?

मैंने उस आदमी से कहा कि मैं यह देख रहा हूँ कि तू कुछ नहीं बोलता और यह औरत इंसानियत वाली कोई बात नहीं कर रही, तेरे गले में डंडा मार रही है अगर तू मुँह खोल दे तो हो सकता है तेरा गला ही फट जाए। उन दोनों ने मुझे बताया कि आज से चालीस साल पहले हमें महाराज सावन सिंह जी से 'नाम' मिला था। मैं महाराज जी पर विश्वास करता हूँ। अपना भजन-सिमरन करता हूँ, मीट-शराब नहीं खाता-पीता। मेरे साथ हर रोज ही ऐसा होता है, मैं अपना कर्म दिल लगाकर भोग रहा हूँ।

जो प्रेमी अंदर जाते हैं वे समझते हैं कि परिवार, यारी-दोस्ती, खटपटी हमारे पिछले लेन-देन के हिसाब से ही होती है अगर किसी से अच्छा देन-लेन है तो प्यार होगा अगर किसी से पिछले जन्मों का लेन-देन बिगड़ा हुआ है तो उससे खटपटी होगी।

आप सबने सुंदरदास की कहानी पढ़ी है। सुंदरदास महाराज सावन सिंह जी का खास प्यारा था। वह काफी समय सावन सिंह के पास रहकर सेवा करता रहा। एक बार महाराज जी ने मौज में आकर उसे बताया, ''तेरी पत्नी संसार छोड़ जाएगी, तेरा लड़का भी जवान होकर संसार छोड़ जाएगा, तेरा दिमाग खराब हो जाएगा। ऐसी हालत में तुझसे कत्ल हो जाएगा, तू दण्ड भुगत लेना।''

सुंदरदास की राजा फरीदकोट से अच्छी मुलाकात थी। उसे सारी कहानी का पता था कि इसके साथ बहुत कुछ बीत चुका है इसका दिमाग ठीक नहीं है। सुंदरदास अपनी जुबान से बिल्कुल नहीं बदला बल्कि उसने जज़ से कहा कि कत्ल मैंने किया है तो आप मुझे दण्ड क्यों नहीं देते? उसने यह भी बताया कि मेरे गुरुदेव ने कहा है कि सजा बीस साल की होगी लेकिन मुझे जेल में छः साल ही काटने है। जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान आजाद हुआ उस समय हिन्दुस्तान में बीस साल वाले कैदियों को छोड़ दिया गया। उस समय सुंदरदास को जेल में छः साल ही हुए थे।

जिस समय महाराज सावन सिंह जी ने सुंदरदास को इस घटना के बारे में बताया उस समय सुंदरदास की शादी नहीं हुई थी। सुंदरदास शादी नहीं करवाना चाहता था क्योंकि उसे होने वाली घटना का ज्ञान था। उसने हँसकर यही कहा अगर ऐसा होना है तो मैं शादी ही नहीं करवाऊँगा लेकिन समय आने पर हालात इस तरह के बन गए कि उसके परिवार वालों ने कहा या तो तू शादी करवा नहीं तो हम कुएँ में कूदकर अपनी जान दे देंगे इसलिए उसे शादी करवानी पड़ी और यह सारी घटना घटी। उसने इस भाणें को मीठा करके मान लिया। एक बार अभ्यास करते हुए सुंदरदास की टाँग जल गई। उस दिन हमारी आठ घंटे की बैठक थी

लेकिन उसने अभ्यास से उठकर यही कहा कि आज अभ्यास में जितना रस आया है इतना रस जिन्दगी में पहले कभी नहीं आया। उसने काफी सतसंगियों के सामने महाराज कृपाल के साथ अंदर के नजारे बताए।

मैं सदा ही सन्तबानी मैगज़ीन पढ़ने के लिए जोर दिया करता हूँ। मैगज़ीन के अंदर बहुत से सतसंग और सवाल-जवाब छप चुके हैं और काफी कुछ अंदर के मण्डलों के बारे में ब्यान किया गया है। हम सतगुरु की दया के बिना सतसंग में नहीं आ सकते। सतगुरु नामदान के समय हमारे कितने कर्म काटता है जो हमें अंदर जाने में बाधा डालते हैं। हम जैसे-जैसे तरक्की करके अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करते हैं, हमें जिस गुरु ने नामदान दिया होता है वह हमसे पहले वहाँ खड़ा होता है। हम जैसे-जैसे ऊपर के मण्डलों में जाते हैं वैसे-वैसे सतगुरु हमारी आत्मा को कर्मों के बोझ से हल्का करता जाता है। हमें काफी समय त्रिकुटी में रहकर अभ्यास करना पड़ता है क्योंकि वहाँ संचित कर्मों का खजाना जमा होता है। वहाँ हमारी आत्मा साफ हो जाती है। जिस तरह मशीन में अनाज डालने से दाने एक तरफ और भूसा दूसरी तरफ हो जाता है।

इस तरह बुरे कर्मों का असर आत्मा से उतर जाता है और हमारी आत्मा ऊपर के मण्डलों में चली जाती है अगर गुरु हमारा साथ न दे तो हम कभी भी अंदर नहीं जा सकते। यह कहने या ब्यान करने की बात नहीं जैसे-जैसे हम सूक्ष्म, महा सूक्ष्म मण्डलों में जाते हैं हम खुद ही अपनी आँखों से देखते जाते हैं। हम जब तक सच्चखण्ड नहीं पहुँच जाते सन्त हमारा साथ नहीं छोड़ते। सन्त परमात्मा के आगे हमारी आत्मा को खड़ी करके यही कहते हैं कि यह तेरा जीव है, भूल गया था माफी लेने के लिए आया है। ***